

न धन धनाध्यायेत् ॥ इति षट्कल पूजा ॥ ॥ तथा त्रि
 कल पूजा ॥ दक्षिणेना तुं ॥ काष्ठा किं दवी धीपादकी पूज
 यामि तर्पयामि नमः ॥ वामे कल ॥ क्रीं क्रीं नष्टा किं दवी
 धीपादकी पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ॥ गङ्गा कल ॥ क्रीं
 क्रियां का किं दवी धीपादकी पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ॥ तथा ध्यानं ॥ नमो वत्सं द्रुजा नीलात्यलं च य धनाध्या

दत्त भालिनी दृष्टव्यं तौ च मोदनी प्रभा

दिष्टासुनवा ॥ ॥ आशानरुमोनिधाय ॥ ॐ पथित्वयाधृता
लाकादवीर्षविष्णुनाधृता ॥ ॐ वधानयमीदवी ॥ पविर्दुक्कनूमा
सनी ॥ ॐ कर्मासनायनमः ॥ ॥ अरुणविकिन ॥ ॐ दिवगिनी ॥ ॐ
सादि ॥ लनसुदि ॥ आत्मयुजाविधाय ॥ ॥ चन्द्रना ॥ अरुण
सा ॥ अथनसर्ववाशनसुह ॥ आवाहयतु ॥ ॥ मालिनीयध

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ श्रीमहारे नवडवा ॥ ॐ अथर्वमा
लिनीदवी ॥ निमलमलना ॥ शिनी ॥ हान ॥ शक्ति ॥ प्रभुदेवी
वृद्धिस्वीत ॥ अवर्द्धनी ॥ अननी सर्वरुगानी ॥ सीसा ॥ अस्मिन्व
वस्मिता ॥ नमाता ॥ वीना ॥ वलिदवी ॥ का ॥ नृत्पंक ॥ नवत्सल ॥ ॐ
अथरियनरत्न ॥ निर्वात ॥ वैर्जी ॥ सीरु ॥ तित ॥ आमयी ॥ निः ॥ हता
यक ॥ नृपा ॥ रुवा ॥ पना ॥ हान ॥ शक्ति ॥ स्व ॥ मि ॥ का ॥ क्रिया ॥ मंगला

नी३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वाद्यानकी गानु शाकि यनामा लिनी नृदमाता चित्र
नृदशाकि ४ ख मी सि दी पा ॥ ४ धवनी ॥ सिद्धि माता विरू
४ शाष्ट ना ज्ञाति या गी न्या ॥ ४ वी वा ग्नि स ४ द्रो ज्ञा वा सि
द्धि वा ॥ ४ धवनी माह का सिद्धि मिक्का क्रिया म ज्ञला ॥
सिद्धि लक्ष्मी ४ विरू ति ४ सूरु तिर्गा ति स्वाहा स्वधा ॥

स्वाकि ना नायली नक वलु क नाल रु ॥ ४ सी म नृपा
महा रु ४ पा ग पि या त्वं रु प त्या जिता नृदशाकि सी भा
हिनी ल्वेन वा त्मान नृद व स्य वा त्से ग या ना स्म ता म नृ ॥
मा ग्नि न ॥ ४ सी म नृ ॥ ४ वी न या ना न न क ४ सूरु के ४ धवनी ४
४ स्व द वी प व श म ते ४ दि वा पा ॥ ४ त्व वे म् ४ रु के काल
का पा ल धा नी ॥ ४ प्र क रु त्स दि रु त्स रि रु त्स व रु प्य ४

अथ अक्षरान्माह्वे ४ साम्बर्वर्के ४ यनात्री ४ उरे ह्नु
रिह्यस्य मद्यमी सपिपमनुविद्यावताहासि रिदि
वर्पोननरे नमस्कात्र ४ उं कान ४ स्वाहा कान ४ स्वधा
कान ४ वाषट् कान ४ वषट् कान ४ हूं कान ४ रुट् कान ४
जाती रित्रते ४ यमनुद्वात्रात्रिह्वामहस्सुस्त्रिते ४
अहस्सुवावली जापिरी ४ साधके ४ पत्रके ४ माहुरि

मर्मलुलेदीक्षिते पाणि रिपोनी वृन्दभलायके नृद्रा
की गालुसंपुष्क मया गिन्याया गसिद्धि प्रद ॥ दवीत्वं
पद्मपद्म पर्मला वने ४ स्तर्द संपुष्क म्पु संपुष्क ४ ग
स्यदद्यान्त्री ह्नुस्त्रिता सफपाताल सखवत्री सिद्धि
दद्या रुता वर्कत ४ रुकिताय ४ पथर्द लुकमकका
लीदिका वृत्तिका नवदुष्य अथ अक्षरवादी ४ उचिसं

सुत्र ४॥ सदा मानवः सायित्री नाग्निः ४॥ म्हाल्लुधयव
ता (गुपिसे नक्षु सः दवी पशान नागा सहालक्षी पदः ४
रुमत्री नान्यदा नानु ४ का ४ वक्षः ४ (गु ४ महादा
यादृष्टा ४ विमः ४ कु ४ सी सृगावदियमरविपुर्नवन्दा
नूकालिस्तु नदिवामातिरु ककुलाद्यष्टगुस्तुला
४॥ ययिवर्द्धादृष्टे वैन्धने नानाया (गु ४ कावर्द्धपादीः

गुलेक्षुपित्वनामसंकिर्तनादविमयान्किथात्रेर्महा
याद्विरि ४॥ सी सृगायादा नविन्दु दयान्क महाकालि
कालाग्निरुप्ररु नस्कन्द (गु ४ विन्दु ४ वक्षः ४ वन्दाः
र्कः ४ पद्यायुधेमीलिमालास्तसत्यदार्किरुल्क ४ स
त्यैरुले ४ सद्यः स सर्ववी नान्विकरु नवीरु नवम्
४ नानागार्हः रुम स्यापनार्धशि व ॥ प्रवम्बुत्वा

१४ ॥ पायात ॥ पूसादवयेधि ॥ शुमावलिमी
वा ॥ कैडाखा नाठवठ ॥ ठिऊलखा लाठवठ ॥ च
कुर्णमवठखा ना ॥ शीखलु कंकम कम्बु विर्कपूत्र
ठवनावन ॥ लैस नाव ॥ सिंधुवर्तगान ॥ पूजाऊ ॥
पूयवाडा गुठुलि ॥ न्यान घठिठवठ ॥ न्यानधानाठव
ठ ॥ वतामाध समय ॥ हामलवकनकल ॥ शायू

काथालक ॥ यिपूकाथालक ॥ मालंपति ॥ यैवनल
रु ॥ शीठपात ५० ॥ नीवतपू ५० ॥ गुजावन ॥ भलानी
वतपू ॥ खालपात १४ ॥ वलिपात १॥ निष्पतिदठवर्क
२ ॥ कंकलपूजाऊ ॥ हसर्क ॥ मसा खानदक ॥ लाक
दिवापूर ॥ कवाह ॥ कलसमावपू ॥ ऊलिभलापा
त १०० ॥ थरपूत्रकपाता ॥ ॥

१ॐ नमो श्री नृत्त्यं ध्वनाय ॥ श्री गुरुभ्यां नमः ॥ मलसि
द्धि क्रमपत्रिया तिलिख्यत ॥ ४ ॥ रुधू काङ्ग निमैतन ॥ ४ ॥
मर्त पूजायाय ॥ पृलाङ्क ध्वय ॥ ऐतिक्कूः आचार्यनीः
प्याखनभीः गायनः ६ लूसियायः खलिस्नानयायः व
मुरुल ॥ ५ ॥ अदिनीः थवथवः निरुक्कर्मधूनकावः
१० तासु लिडिडधाननी ॥ कमुत्रिक्कपूवः कूकूमः ध्व

भावनः श्री खलुः शुनाः सकलामिष्टी ॥ १ ॥ हवल्लुल्लि
नीः वकुडध्वनः ॥ विकानः अरुक्कानः अरुपयः हव
नः वरुनः वरुद्वानसहिर्त ॥ २ ॥ हलिलिस्काया ॥
१० नाट ध्वनः पूजास्काहावः वैन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ खिनः पृलुक्क
वैथल ॥ ४ ॥ पूनः नाट ध्वनः सः मर्जाताथ्यं समर्कवाय
॥ ५ ॥ पूनः पृलुक्कसः मालकीः थंदिनि आदिनीवाय ॥

तथाभादनी मलुलमालरुतु ॥ कर्पू नर्ककम ॥ एवभाव
 हाष्टीखलु कमुनि ॥ गुना ॥ शकल ॥ लामिष्टी ॥ हामिल
 पनी ॥ १ ॥ त्रिकल ॥ षट्कल ॥ अष्टपत्र ॥ त्रिवृत् ॥ वगुष्ट
 वगुदान ॥ नरुवृ ॥ लूनकला ॥ १ ॥ त्रिकलमधदीय
 पात्र ॥ त्रिकलस ॥ ऊवखवहुववाय ॥ खालड ॥ खत
 का ॥ सवाय ॥ खालड ॥ अष्टपत्रसवाय ॥ श्री ३ ॥

त्रिवृत्सवाय ॥

श्री ४

४ वगुष्टसवाय ॥ श्री १० ॥ दानसवायदहादी ॥ श्री ४
 वगुदानस ॥ वलीयात ॥ धरुसमालका ॥ अदिकवाय ॥
 श्री ४ ॥ तथापृषाहादनी ॥ नाटधनपूजन ॥ स्नान ॥ पंच
 मृत ॥ अलिस्नान ॥ स्नानलीखनहाय ॥ धनि ॥ वजि ॥ वाना
 वली ॥ दैथाहाव ॥ खरि ॥ दवसक ॥ गुहावत ॥ वचन
 सिधुन ॥ ऊजामका ॥ दहि ॥ अदवान ॥ स्नान ॥ समरु ॥ म

जोताथी पञ्जायाय ॥ अद्यादि ॥ ह्यर्थाद्यदद्यात् यथावा
कः ॥ अखलुमलुलाकालनः ॥ गुननमस्कात्र ॥ न्यास ॥
ॐ हूं हूं ॥ अम्नाय रुद्र ॥ कनधाधुनी ॥ ॐ गुहाय
नमः ॥ ॐ नकुन्येनमः ॥ ॐ मध्यामायेनमः ॥ नमः अनासि
कायेनमः ॥ ॐ कनिष्ठायेनमः ॥ ॐ अम्नायनमः ॥ कन
न्यास ॥ ॐ रुद्रायनमः ॥ ॐ शिवसखाहा ॥ ॐ शि

वायेवोषदः ॥ नमः कवचायहं ॥ ॐ नगुण्यायवषदः ॥ ॐ
अम्नाय रुद्र ॥ ॐ न्यास ॥ ॥ ॐ हूं हूं ॥ शिखास्का
न ॥ ॐ हूं हूं ॥ संहि वस्काभ ॥ ॐ हूं हूं ॥ ललाट ॥ ॐ हूं हूं ॥
वकुमलुली ॥ ॐ हूं हूं ॥ रुद्रायनमः ॥ ॐ हूं हूं ॥ नाहा
ॐ हूं हूं ॥ गुह्य ॥ ॐ हूं हूं ॥ जान ॥ ॐ हूं हूं ॥ पादद्वय ॥
नवाक्ष न्यास ॥ खतं ॥ कलपोपायपूजा ॥

ॐ ह्रीं मंमदं कालमहादेव वा यनम ४॥ दातम ॥ ॐ ह्रीं
आधात्र ४॥ कनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अतना सना यनम ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं कला सना यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं नाला सना येनम ४॥
ॐ ह्रीं श्रीं पद्मा सना यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं पद्मा सना यनम
४॥ ॐ ह्रीं श्रीं कला शानम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं कला का येन
म ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं पद्मा सना यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं पद्मा सना

यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं पद्मा सना यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं धर्मा यन
म ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं कला यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अवेना ह्या यन
म ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ४॥ अवेना यनम ४॥ आरुत यादि ॐ ४॥ ना
र्क ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अधुर्मा यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहना य
नम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अवेना ह्या यनम ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अने ४॥
या यनम ४॥ एवादि उक्त नार्क ॥ ८ ॥

१०॥ शास्त्रानाम् ॥ त्रैलोक्यं द्रुहं हृत् ॥ अकवकैर्विशतं ॥
 नागकलुलमलितं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥
 तस्यैव कलुलं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ ऊटाकूटशिखरं ॥ अश्वमेधं ॥

ॐ कपालेव कर्मलं ॥ सद्गुरुं सूर्यसंकाशं ॥ क
 लारिर्नृपं नृत्यं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥
 नसंपूर्तं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥
 अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥ अश्वमेधं ॥

त्रियाङ्गलि ॥ ४ ॥ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं म हानुत्य श्वनः
रे नवाय मृगीं श्रीं नृत्यलक्ष्मीं श्रीं शक्तिमहिता
यनम ॥ ३ ॥ ॥ ऊवस ॥ ॥ ऐं ह्रीं नैर्नदिननम
॥ ऐं ह्रीं (लो ग) लपतयनम ॥ ४ ॥ ऐं ह्रीं ह्रीं वरु कनाथा
यनम ॥ ४ ॥ मध्य ॥ ॥ ऐं ह्रीं वामायनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं क्षीननम ॥
॥ ऐं ह्रीं नोदीनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं कालिनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं कलविकल्पीन

म ॥ ॥ ऐं ह्रीं वलविकल्पीनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं वलपमथनीनम ॥ ॥
॥ ऐं ह्रीं सर्वरुतयमनीनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं मनामनीनम ॥ ॥ पूर्वा
दिष्ठी ॥ ॥ नार्क कल्कि कष ॥ ॥ ऐं ह्रीं ॐ कायनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं
हानायनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं क्रियायनम ॥ ॥ मध्य ॥ ॥ ॥ ऐं ह्रीं स
द्याजातायनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं वामदेवायनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं अर्धात्रा
यनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं तत्पूत्रसायनम ॥ ॥ ऐं ह्रीं ॐ शानायनम ॥ ॥

मध्य॥ ॐ हूं शक्तिनी नमः॥ ॐ हूं वाकिनी नमः॥ ॐ हूं
 लाकिनी नमः॥ ॐ हूं काकिनी नमः॥ ॐ हूं साकिनी
 नमः॥ ॐ हूं हाकिनी नमः॥ ॐ हूं याकिनी नमः॥ ॐ हूं
 रासनी नमः॥ पूर्वदिग्दशानानी॥ ॐ हूं हंस
 काय नमः॥ ॐ हूं त्रिपुत्राक्षकाय नमः॥ ॐ हूं अग्निव
 लाय नमः॥ ॐ हूं अग्निजिह्वाय नमः॥ ॐ हूं का

१०० तानुत्य शाकि देवी पूजयतु ॥ ॥ जैं श्रुं वृक्षाय
ली देवी श्री पादुकी पूजयामितर्यु यामिनम ॥ जैं श्रुं
कै माहं श्वरी देवी श्री पादुकी ॥ ॥ जैं श्रुं वै को मात्री देवी
श्री पादुकी ॥ ॥ जैं श्रुं वै सुवी देवी श्री पादुकी ॥ ॥ जैं श्रुं तं
वा नाही देवी श्री पादुकी ॥ ॥ जैं श्रुं यं ह्नु द्या पती देवी श्री
पादुकी ॥ ॥ जैं श्रुं यं वामलु देवी श्री पादुकी ॥ ॥ जैं श्रुं स

महालक्ष्मी देवी श्री पादुकी पूजयामितर्यु यामिनम ॥
ह्नु द्या दिवलि ॥ ॥ जैं श्रुं स ह्नु नवा सुश्वरी नम ॥ जैं व
द्रा कुं श्रुं डिनी ॥ ॥ जैं श्रुं ला का कषली जी स्त्री का मा झ द्रावः
ली स्त्री की महा शौर का त्रिही जैं सः श्री पादुकी पूजयामि
तर्यु यामिनम ॥ ॥ ह्नु द्या दिवलि ॥ ॥ जैं श्रुं स्त्री सर्व श्री रा
ह्नु श्वरी देवी श्री पादुकी पूजयामितर्यु यामिनम ॥

पछी पादकी १० ॥ सा ७ को १० ॥ सात्मन श्रीमहादेव नवा
 पछी पादकी १० ॥ क्रौं क्रोधन सात्मन श्रीमहादेव नवा पछी
 पादकी १० ॥ क्रौं दास्य न सात्मन श्रीमहादेव नवा पछी
 पादकी १० ॥ ॥ क्रौं रुपा न क न सात्मन श्रीमहादेव नवा
 पछी पादकी १० ॥ क्रौं वी न रुद्र स न सात्मन श्रीमहादेव
 नवा पछी पादकी १० ॥ क्र ४ वी द न सात्मन श्रीमहादेव

वाय श्री पादकी १० ॥ क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्र ४ सोम्य न सात्मन श्री
 नृस्य ष्व न श्रीमहादेव नवा पछी पादकी पूजया मितु र्य पा
 मितम ४ ॥ धत नी वली ॥ ॥ जव स ४ ॥ ॥ ॐ हूं (ॐ) गहाः
 फय विध्व ष्व नाय विनाय काय श्री पादकी पूजया मिति
 म ४ ॥ ख व ला स ॥ ॥ ॐ हूं श्रीं क्रौं व द काय विद्या धि फय श्री
 पाद पूजया मितम ४ ॥ मध्य स मूल मन्त्र न ४ प्रिया डेर ली ३ ॥
 को

ॐ श्रुतं श्रीमहानृत्यञ्च नरेन वायुं स लनृत्यलक्ष्मीं चाकि
हाहिताय श्रीपादकीपूजया मितम ॥ ॥ आवाहनादि ॥
धनं विष्णुलक्षणमिन्द्रादर्थयत् ॥ ॥ ततावर्तिदद्यात् ॥
ॐ ह्रीं लोभापतयं मीपूजावर्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं वदकनाथाय मीपूजावर्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥
ॐ ह्रीं नन्दिनवर्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मर्दकालाय व

र्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कौसवस्मानक्षयपालाय वर्तिं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं रुद्रे श्रीनृत्यञ्च नरे श्रीमहानृत्ये नरे वा
यवर्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीनृत्यलक्ष्मादि सर्वथा
गिनी र्थावर्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सर्वरुत र्थावर्तिं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नृत्यञ्च नरे श्रीमहानृत्ये नरे वायु त्रीदश
ब्राह्मि त्रीदश यदि फदी फाय प्रमनाय न कस्मिन् राय

तद्यथा रुतश्च दहश्च पवश्च मधश्च कृत्स्नश्चिन्दश्च नक्तर्
वनकात्रयित्थनद्वित्रित्दृष्टिर्दन्तिनीक्षित् सर्वसत्त्वः
वमश्च खादिश्च यत्र मन्तुनायस्यश्च अग्निरुक्तायश्च यत्र
वशाकृत्सुक्तायश्च शाकृत्कनानिधनं सु सपुत्र सर्ववान्धवा
मास्यश्च ॐ दै मया पृथ्वी धूपदीप इहोपवीतान् अलि
वलि पिसित् ॐ मीवलि गङ्गाश्च पुनश्च मन्श्च स्वतश्च

श्चादिश्च महाशमनाधिक्यं महानृत्यनृपायश्च म
स्वकृमस्व यत्रार्धं नमः ४ दृष्टुश्चाह ॥ ॥
श्वासीनया तालववलि र्वि समस्त मालका प्रजाया
पः ॥ ॥ अमुमन्तुन अर्धपात्रादकद्वयेन हाय कवच
मन्तुन अर्धगुठनीना ॥ ॥ धनमद्राकन मूलमन्तुन
वक्ता स्वानकर्तनीना ॥ ॐ वक्ता ॥ नमः ॥ ३ ॥ ताल ॥ ॐ

हैंतववतिसमर्क यत्नालायनमः॥ शिवं डवस॥ ॐ हूं
नन्दिमल्लालायनमः॥ शिवं स्ववस॥ ॐ हूं मरुंकालमैः
लायनमः॥ केशमल्लजना॥ ॐ हूं सः नमानात्राय
यनमः॥ ववलिना॥ ॐ हूं ककासल्यायनमः॥ ॐ हूं की
सधवलायनमः॥ ॐ हूं मर्जनायनमः॥ श्रीगङ्गाकाहं
हं किन्ननायनमः॥ श्रीगङ्गा॥ ॐ हूं किन्नयेनमः॥ गङ्गा॥

ॐ हूं सर्वशोरायः स्वत्री श्रीपादकी पूज्यामितव्यपासि
नमः॥ न्यासनावे हूं श्रीगुणायै नमः॥ ॐ हूं तर्कन्यायहं
नमः॥ ॐ हूं मध्यायै नमः॥ ॐ हूं अनामिकाय स्वाहाः
ॐ हूं कनैषायै वः ॥ ॐ हूं अफायरुद्र ॥ कल
सधर्न करन्यासनावे हूं हृदयाय नमः॥ ॐ हूं शिबसखा
हा ॐ हूं शिखायै वीर ॥ ॐ हूं कवचाय हं ॐ हूं नग

वयं नमः ॐ ह्रीं श्रीं अस्माकं परमेश्वर ॥ अस्तु नमः ॥ ततो ध्यान
 नात्र कवर्त्तुं दधु जायते वनदारुयधा नली न भादृ परतु
 गुरु सर्वं तैला कवर्त्तुं कात्रिली ॥ ॐ ति ध्यानं ॥ ॐ
 ह्रीं कौकालमर्त्तुं पतित्र अस्तु पतायनम ॥ ॐ ॐ ह्रीं तमस्वा
 हा ॥ त्रिपा अस्तु लिं ॥ धरत न जाय ॥ ॥ ॐ ॐ पूजा विधिना
 मूलमर्त्तुं न घाद्य न पूजनी ॥ खर्त्तुं नान पदयतुना ॥

॥ २ ॥ ॐ ॐ अस्तु नान पदयतुना ॥
 ततो वाहनयुजा प्रता स्नायनम ॥ ॐ ह्रीं महाकालाय नमः ॥
 ॐ त्यादिवर्त्तुं ॥ ॥ ततो भादानीयुजनी ॐ ॐ ह्रीं अस्तु नान पदयतुना ॥
 सुमा दवी श्री पादकी युजयामितर्यो यामितनम ॥ ॐ ॐ ॐ अस्तु
 नान पदयतुना दवी श्री पादकी ॥ ॐ ॐ ॐ अस्तु नान पदयतुना दवी श्री पादकी ॥
 ॐ ॐ ॐ अस्तु नान पदयतुना दवी श्री पादकी ॥ ॐ ॐ ॐ अस्तु नान पदयतुना

ॐ श्री पादकी ॥ ॥

नीदवी श्रीपादकी १०॥ जैं हौं ७ अतन कसमादवी श्रीपाद
की १०॥ जैं लैं कैं अतन मालिनीदवी श्रीपादकी १०॥ ॥ जैं
नये वू द्वा हा कैं नमः॥ श्री श्री हन हा कैं नमः॥
॥ श्री मना रुवाये क्रिया हा कैं नमः॥ जैं श्री श्री ४ सर्व जन मा
रुनीदवी श्रीपादकी पूजयासि॥ त्रिपी जलि ३॥ दुं भाद
नीदवी श्रीपादकी पूजयासि॥ आवाहनादि॥ वसी दाभा॥ जैं

राग्य ध्वनीदवी जैं सर्व सभा रुनी श्रीदवी
सी पूजा वलि ४८ झर खाहना ॥ सर्व सभा रुनी मद्रादर्थ
पत्र॥ धत भादनी पूजा विधिना ७॥ तालयति दयक विधिना
हुज पत्र सवाय ॥ गभावनन मल मनुवाय ॥ मनु नलि व्या
वनया पात्रया नाम स ॥ जाज नय ॥ सैरुका ॥ नकर सिद्धि २
हैं नमः॥ त्रका ॥ पुका ॥ पुर्यगु ॥ सत पष्य ॥ अकत ॥ नुय खान

धतं पुरुषं दूधनं पूजनं नाठं श्वनं मूलं मन्त्रं नृद
 पादिं खं ठं नानं पूजां आवाहनादिं धृं आदिनं मालकां
 सां (सां) पाठनं पूजां पाठावनां धूपं दीपं नैवेद्यं जापनां हस्तं
 १०४॥ श्रीं ॥ अष्टांगं नमस्कारं याय ॥ ॥ धतं धनं दावपूजं
 कंदयकलं शां फलं कं स पूजा याय ॥ मदतं सां पं शुभं र्घ्यं न
 यायना ॥ ततां पलं कं या पूजा विधानं धतं ॥ ॥ १३० नमः ॥

५ श्रीं ॥

श्रीं सर्वं श्रीं राघवं श्वनीदवीं नमः ॥ ततां भादनी साधनं ॥
 वीनकलं स (व) ठं वनं त्रिकोणं ॥ पञ्चं नलं गुरु ॥ वक्रः
 कपटं न पञ्चाद्य ॥ १॥ संहिता गृह्यापयत् ॥ मूलकलं सव
 ठं स्त्रीं ॥ वागुरु वस्य वनं पूरु कं कप्य माला ॥ कामनां
 स्य वनं ॥ पाठा कं शां किं वीर्यं स्य वनं ॥ ॥ १॥ ततां संहिता
 लिङ्गधर्मा कस्तुनि कपून् कूकूम (सां) नावनं श्रीं ख

छुना सकलामिष्टीनां शुक्ललखिन्या कर्माधो न
त्रिकोन अष्टकोन अष्टपत्र त्रुवत्रु वरुनद्य वरुदात्र
कलिलिस्त्रापयत्ना ॥ तथा माहनी मलुलमालरुत
कपूरकैकम (गात्रावन श्रीखलु कमुनि शुना सक
ल लामिष्टी रुमिलपनी ॥ त्रिकोण षट्कल अष्टपत्र
त्रिव्रु वरुद्य वरुदात्र नानकलाना त्रिकोणम

धदीपपात्र त्रिकोनम ऊव खव हवनवाय षट्कलम
वाय खालषु ॥ अष्टपत्रम वाय खाल व्या ८ ॥ त्रिव्रुम
वाय अ ३ ॥ वरुनद्यम वाय अ १० ॥ दात्रम वलि पा
तजधत समालक अदिकवाय धतवायविधि ॥ ॥
तथाप्यराजनै सुन्योर्ध्वदद्यात् ॥ वर्तिसैन्यासकात्र
पत्ना जलपात्र अर्घ्यपात्र पूजा आत्मपूजा ॥ उँङी

श्री आधात्र सकं नमः सादि ॥ शमालनीय ॥ ०० ॥ ॥ पर्व ३ व
लिं ॥ तता मोहनी मलु ल विवक्ष मध आसं ॥ ॥ उं क्री
श्री आधात्र सकं यं नमः ॥ उं क्री श्री मलु प्रकृति यं नमः ॥
उं क्री श्री अनन्ता यं नमः ॥ उं क्री श्री मलु का यं नमः ॥ उं क्री श्री
पश्चिमे यं नमः ॥ उं क्री श्री भव पर्वता यं नमः ॥ उं क्री श्री उद्या
ना यं नमः ॥ उं क्री श्री नत्त मलु या यं नमः ॥ उं क्री श्री धर्मा

यं नमः ॥ उं क्री श्री ह्ना ना यं नमः ॥ उं क्री श्री वे ना ह्ना यं नमः ॥
उं क्री श्री ४ वे म्ना यं नमः ॥ उं क्री श्री अधर्मा यं नमः ॥ उं क्री
श्री अवह्ना यं नमः ॥ उं क्री श्री अवे ना ह्ना यं नमः ॥ उं क्री श्री
अनी खर्मा यं नमः ॥ उं क्री श्री मलु गुला यं नमः ॥ उं क्री श्री न
हु गुला यं नमः ॥ उं क्री श्री त मलु ला यं नमः ॥ उं क्री श्री साया
यं नमः ॥ उं क्री श्री विद्या यं नमः ॥ उं क्री श्री वन्द्य मलु ला यं

सर्वजनवर्धमानधस्वाहानादक्षिणद्वात्रयैः श्रीं ह्रीं वां
वदूकनाथाय नमः ॥ स्वाहा ॥ पश्चिमद्वात्रयैः श्रीं ह्रीं वां
यनमः ॥ स्वाहा ॥ उत्तरद्वात्रयैः श्रीं ह्रीं वां वल्लिकाय नमः ॥
स्वाहा ॥ ॐ तिद्वात्रयैः श्रीं ह्रीं वां नमः ॥ ॐ न्यादि
दशलोकपाल १० ॥ ॐ न्यादिलोकपालबहुष्टयैः ॥ ॥ त
थाष्टदलैः ॥ श्रीं ह्रीं वां कैं वैं वैं वैं ॥ अर्नगकृष्णमा

दवीश्रीपादकीपूजयामि तर्पयामि नमः ॥ पुर्वखाल
श्रीं ह्रीं वां वैं वैं वैं ॥ अर्नगमलीषलीदवीश्रीपादकीपूज
यामि तर्पयामि नमः ॥ आग्नेयश्रीं ह्रीं वां वैं वैं वैं ॥ अर्न
गमदनादवीश्रीपादकीपूजयामि तर्पयामि नमः ॥ दक्षि
ण ॥ श्रीं ह्रीं वां वैं वैं वैं ॥ अर्नगमदनागुनादवीश्रीपा
दकीपूजयामि तर्पयामि नमः ॥ नैऋत्यश्रीं ह्रीं वां वैं वैं वैं

मैं अतः नमः दवीष्टीपादकी पूजयामि ॥ पञ्चम ॥
उँकीष्टीयैवंलैवं अतः नमः विलीदवीष्टीपादकी पूजया-
मि तर्पयामिनमः वायवा ॥ उँकीष्टीष्टैवंसैहं अतः नमः क-
ष्टुमादवीष्टीपादकी पूजयामि तर्पयामिनमः कवेल ॥
उँकीष्टीलैकं अतः नमः मालतीदवीष्टीपादकी पूजयामि-
तर्पयामिनमः ॥ ॐ नमः ॥ इति अष्टदलपूजाविधिः ॥ १॥

तथा षड्कनपूजा उँकीष्टी मादुलकामायष्टीपादकी-
पूजयामि तर्पयामिनमः ॥ उँकीष्टीकंदर्पकामायष्टी ॥ ३ ॥
उँकीष्टी सकनधुजकामायष्टी ॥ ३ ॥ उँकीष्टी मनामथका-
मायष्टी ॥ ३ ॥ उँकीष्टी कामध्वनीकामायष्टी ॥ ३ ॥ उँकीष्टी-
आकर्षणकामायष्टीपादकी पूजयामि तर्पयामिनमः ॥
तथा ध्यानना अतिवक्तव्यं वरुणुजायाष्टी कृष्णपञ्च